जॉन हैनरी

जॉन हैनरी

जॉन हैनरी

इस कहानी में जॉन हैनरी के अदम्य साहस का विश्वसनीय चित्रण करने का प्रयास किया गया है. उसका अदम्य साहस उसकी ऐतिहासिकता के प्रश्न को महत्वपूर्ण बनाता है पर अंतत: यह ऐतिहासिकता गौण ही प्रतीत होती है. क्या जॉन हैनरी नाम का कोई व्यक्ति सच में था, ऐसा निश्चित नहीं है. बहुत लोग उसके अस्तित्व को सत्य मानते हैं और कई लोगों ने इस सत्य को प्रमाणित करने का प्रयास भी किया है. जी. बी. जॉनसन ने अपनी पुस्तक 'जॉन हैनरी: ट्रैकिंग डाइन अ नीग्रो लैजेंड' (1929) और आइ. डब्लू. चैप्पल ने अपनी किताब 'जॉन हैनरी' (1931) में उसकी ऐतिहासिकता को सिद्ध करने की कोशिश की है. जिस काल में जॉन हैनरी कथित तौर पर रहता था उसके 50 से अधिक वर्षों बाद यह प्रयास हुए थे पर कोई भी विश्वसनीय प्रमाण लेखक नहीं जुटा पाए थे. तथापि अमरीका में जॉन हैनरी को प्रतिष्ठा आर. ब्रैडफोर्ड के उपन्यास 'जॉन हैनरी' (1931) द्वारा मिली.

इतना निश्चित है कि वैस्ट विर्जिनिया की समर्स काउंटी के ऐलिगनी पहाड़ों में चैस्सापीक और ओहाइयो रेल-मार्ग पर 1870-1873 के बीच 'बिग बेंड टॅनल' बनाया गया था. अश्वेत लोगों की गाथा 'जॉन हैनरी' इसी स्थान की है. जिन मज़दूरों ने इस टॅनल पर काम किया था उन में शायद पूर्व-दास जॉन हैनरी भी था, हालांकि उसके और 'भाप से चलने वाली ड्रिल' के बीच हुए कथित संघर्ष का कोई प्रमाण नहीं है.

इस गाथा के कई रुप हैं. इस पुस्तक में लिखी कहानी और जॉन हैनरी और 'भाप से चलने वाली ड्रिल' के बीच हुए संघर्ष का विवरण इसी गाथा पर आधारित है.

तुम ने शायद ही जॉन हैनरी का नाम न सुना हो. या फिर सुना तो हो पर उसके जीवन की गाथा की पूरी जानकारी तुम्हें न हो. बस, इसीलिए मैं यह कहानी सुनाने जा रहा हूँ.

जब जॉन हैनरी का जन्म हुआ तो उसे देखने के लिए हर जगह से पक्षी आए. भालू और चीते और मूज़ और हिरण और खरगोश और गिलहरियाँ और यहाँ तक की एक-सींग वाले जानवर भी उसे देखने हेतु जंगल से बाहर आए. और सूर्य भी अपना काम निपटा कर, बिस्तर में सोने के बजाय, चाँद के पीछे छिप गया और चाँद के लहराते कपड़ों के बीच से नये शिशु को ताकने लगा.

जल्दी ही माँ और पापा बाहर बरामदे में आकर सबको अपना नया शिशु दिखाने लगे. यह देखकर कि शिशु कितना सुंदर था सारे पक्षी 'उह' और सारे जानवर 'आह' करने लगे.

इस 'उह' और 'आह' के दौरान, शिशु अपनी माँ की गोद से उछल कर नीचे ज़मीन पर आ गया और बड़ा होने लगा.

वह बड़ा होता गया, होता गया, होता गया. वह तब तक बड़ा होता गया जब तक कि उसका सिर और कंधे बरामदे की छत को फाड़ कर बाहर नहीं निकल आए. जॉन हैनरी को लगा कि संसार में यह सबसे विचित्र बात थी. वह इतनी ज़ोर से हँसा कि सूर्य भी डर गया. वह चाँद के पीछे से हट कर अपने बिस्तर की ओर भागा, जहाँ उसे अब तक चले जाना चाहिए था

अगली सुबह जॉन हैनरी सूर्योदय के समय ही उठ गया. सूर्य अभी उदय न हुआ था. वह थका हुआ था और उसने सोते रहने का निर्णय लिया. जॉन हैनरी को यह स्वीकार्य न था. वह ज़ोर से आकाश की ओर चिल्लाया, "सूर्य, नींद से उठ जाओ! मुझे काम करना है और उसके लिए मुझे प्रकाश चाहिए."

सूर्य ने जम्हाई ली, अपना चेहरा धोया, अपने दाँत साफ किए और झटपट क्षितिज की ओर चल दिया.

उस दिन जॉन हैनरी ने उस बरामदे की मरम्मत करने में अपने पापा की सहायता की जो एक दिन पहले उसके कारण टूट गया था. दोनों ने घर में एक नया भाग बनाया और घर के अंदर एक तरणताल भी बनाया. दुपहर का खाना खाने के बाद उसने एक एकड़ ज़मीन में लगे पेड़ काट डाले और अँगीठी में जलाने के लिए उन पेड़ों को छोटे-छोटे टुकड़ों में काट डाला. इतना काम करने के बाद भी उसके पास रात का खाना खाने से पहले सोने के लिए समय था.

दूसरे दिन जॉन हैनरी शहर गया. वहाँ उसकी भेंट नगर के सबसे घटिया आदमी फ्रैड्डी, जिसका चेहरा गंधबिलाव जैसा था, से हुई जो अपने बड़े सफेद घोड़े पर बैठा था. तुम्हें पता है कि वह क्या कर रहा था? वह कोई नीच काम करने की बात सोच रहा था. फ्रैड्डी इतना नीच था कि अगर उसके मन में कोई अच्छा विचार आ जाता तो वह रो पड़ता था.

जॉन हैनरी ने कहा, “फ्रैड्डी, मैं तुम से शर्त लगाना चाहता हूँ. चलो दौड़ लगायें. तुम अपने घोड़े पर. मैं अपने पैरों पर. अगर तुम और तुम्हारा घोड़ा जीत गए तो मैं एक वर्ष के लिए तुम्हारे लिए काम करूँगा. अगर मैं जीत गया तो तुम्हें एक वर्ष के लिए सब के साथ अच्छा व्यवहार करना पड़ेगा.”

गंधबिलाव-चेहरे-वाला फ्रैड्डी एक दुष्ट हँसी हँसा. “मुझे स्वीकार है, जॉन हैनरी.” उसकी आवाज़ कब्रिस्तान में पंख फड़फड़ाते चमगादड़ों जैसी थी.

जिस रास्ते पर दौड़ होनी थी उस के दोनों तरफ अगली सुबह लोग कतारों में खड़े हो गए. जॉन हैनरी दौड़ लगाने के लिए तैयार था. गंध-बिलाव-चेहरे-वाला फ्रैड्डी और उसका घोड़ा भी तैयार थे.

ठाँय! दौड़ शुरु हो गई.

मेरे पिता के दादा जी के भाई के चचेरे भाई की सलहज के चाचा की बुआ भी उस सुबह वहाँ थी. उसने बताया था कि सब ने गंधबिलाव-चेहरे-वाला फ्रैड्डी को अपने बड़े सफेद घोड़े पर आते देखा था और सच में वह बहुत तेज़ दौड़ रहे थे.

किसी ने जॉन हैनरी को नहीं देखा. क्योंकि वह इतनी तेज़ दौड़ रहा था कि उसके साथ-साथ रहने में हवा की भी साँस फूल गई. जब गंधबिलाव-चेहरे-वाले फ्रैड्डी ने फिनिश लाइन पार की तो उसने देखा कि जॉन हैनरी पहले ही दूसरी तरफ पहुँच चुका था और वह दोलन कुर्सी पर बैठा था और सोडा पी रहा था.

उसके बाद गंधबिलाव-चेहरे-वाला फ्रैड्डी इतना अच्छा व्यवहार करने लगा कि सब उसे मित्रवत फ्रैडरिक बुलाने लगे.

जॉन हैनरी को लगा कि घर से बाहर जाने का समय आ गया था. जाने से पहले उसने अपने माता-पिता को अलविदा कहा.

उसके पिता बोले, “संसार में कुछ अर्जित करने के लिए तुम्हारे पास कुछ होना चाहिए, बेटा. यह तुम्हारे दादा जी के थे.” इतना कह कर उन्होंने उसे बीस-बीस पाउंड के दो हथौड़े दिए जिनकी चार-फुट लंबी मूठ व्हेल की हड्डी से बनी थी.

एक या दो दिन बाद जॉन हैनरी ने कुछ मज़दूरों को सड़क बनाते देखा. वह लोग सड़क ही बना रहे थे कि वह एक ऐसी विशाल चट्टान तक पहुँच गए जो उस जगह पर थी जहाँ उन्हें सड़क बनानी थी. वह कोई साधारण चट्टान न थी. वह गुस्से के समान कठोर थी और इतनी विशाल थी कि उसके एक तरफ से दूसरी तरफ जाने में एक लंबे आदमी को आधा सप्ताह लग जाता था.

जॉन हैनरी ने कहा कि वह उनकी सहायता करेगा.

"कोई आवश्यकता नहीं, हम बारुद का उपयोग करेंगे."

जॉन हैनरी स्वयं पर मुस्कराया, "जैसा आप चाहें."

मज़दूरों ने चट्टान के हर तरफ बारूद लगा दिया और उसे उड़ा दिया.

धड़ाम! भड़ाम! धड़ाम! भड़ाम! धड़ाम! भड़ाम!

बारूद के फटने से इतना भयंकर शोर हुआ कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने आकाश से नीचे देखा और चिल्लाकर कहा, "नीचे बहुत शोर हो रहा है." बारूद के फटने से इतनी धूल और मिट्टी उड़ी कि अँधेरा छा गया. चाँद को लगा कि रात हो गई थी और वह सोता ही रह गया था. वह घर से इतनी तेज़ी से चला कि सूर्य से उसकी लगभग टक्कर ही हो गई. सूर्य ऊँची पहाड़ी पर चढ़ कर दुपहर की ओर जा रहा था.

बारूद के फटने से हुआ कोलाहल जब थम गया तो मज़दूर दंग रह गए. चट्टान वहीं थी. वास्तव में बारुद उसका एक छोटा सा टुकड़ा भी तोड़ न पाया था.

मज़दूरों को समझ न आया कि क्या करें. फिर उन्होंने गर्जन की आवाज़ सुनी. उन्होंने चारों ओर देखा. यह जॉन हैनरी था, वह हँस रहा था. उसने कहा, "अगर आप लोग थोड़ा पीछे हट जायें तो मैं कुछ काम करूँ."

"जो काम बारुद नहीं कर पाया वह तुम नहीं कर सकते,"

जॉन हैनरी मुस्कराया. "बस देखते रहो." उसने अपना एक हथौड़ा अपने सिर के ऊपर गोल-गोल घुमाया. हथौड़ा घुमाने से इतनी तेज़ हवा चली कि पेड़ों से पत्ते झर गए और आकाश में उड़ते पक्षी नीचे आ गिरे.

टन्न्न्न्न्!

हथौड़ा चट्टान से टकराया. चट्टान वैसे ही काँप गई जैसे तुम काँप जाते हो जब सर्दियों की कड़ाके की ठंड में लगता है कि स्कूल बस नहीं आएगी.

टन्न्न्न्न्!

चट्टान उस सुबह की तरह काँप गई जब दासों को मुक्ति मिली थी.

जॉन हैनरी ने दूसरा हथौड़ा भी उठा लिया. उसने एक हथौड़ा अपने सिर के ऊपर घुमाया. जैसे ही यह चट्टान से टकराया-टन्न्न्न्न्!- उसके बायें हाथ में पकड़ा हथौड़ा घूमने लगा और-टन्न्न्न्न्! शीघ्र ही एक हथौड़े की टनटनाहट के तुरंत बाद दूसरे हथौड़े की टनटनाहट सुनाई पड़ने लगी. ऐसा प्रतीत हो रहा था कि दोनों हथौड़े एक साथ चट्टान से टकरा रहे थे.

टन्न्न्न्न्! टन्न्न्न्न्!

टन्न्न्न्न्! टन्न्न्न्न्!

चट्टान से धूल और पत्थर के टुकड़े इतनी मात्रा में उड़ रहे थे कि जॉन हैनरी उनमें घिर कर लुप्त हो गया. लेकिन उसके हथौड़ों की आवाज़ तब भी सुनाई दे रही थी--टन्न्न्न्न्! टन्न्न्न्न्!

ऐसा लगा कि उसके हथौड़ों की ताल पर हवा भी नाच रही थी. मज़दूरों के बॉस ने देखा तो आश्चर्य से उसका मुँह खुला का खुला रह गया. उसने आकाश की ओर संकेत किया.

चट्टान के ऊपर आकाश में एक इंद्रधनुष था. जॉन हैनरी हथौड़ों को इतनी तेज़ी से घुमा रहा था कि उसके कंधों के ऊपर इंद्रधनुष बन गया था. जॉन हैनरी के आसपास फैली धूल और बजरी में वह उस आशा समान चमक और झिलमिला रहा था जो कभी मिटती नहीं है. जॉन हैनरी गीत गाने लगा:

“मेरे पास है एक इंद्रधनुष
टन्न्न्न्! टन्न्न्न्!
जो लिपटा है मेरे कंधों से
टन्न्न्न्! टन्न्न्न्!
नहीं होगी कोई वर्षा
सच में, नहीं होगी कोई वर्षा
टन्न्न्न्! टन्न्न्न्!”

जॉन हैनरी गाता रहा और चट्टान पर हथौड़ों से चोट करता रहा और हवा नाचती रही और इंद्रधनुष झिलमिलाता रहा और धरती कांपती और हिलती रही. आखिरकार सब शांत हो गया. धीरे-धीरे धूल हट गई.

लोगों को अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ. चट्टान लुप्त हो गया थी. उसकी जगह एक ऐसी सीधी और सुंदर सड़क थी जैसी उन्होंने पहले कभी न देखी थी. जॉन हैनरी ने न सिर्फ चट्टान को चकनाचूर कर दिया था उसने पूरी सड़क भी बना दी थी.

दूर जहाँ नई सड़क मुख्य सड़क से मिलती थी वहाँ मज़दूरों ने जॉन हैनरी को हाथ हिला कर अलविदा करते देखा. उसके हर कंधे पर एक हथौड़ा था और प्यार की भांति, इंद्रधनुष उसके इर्द-गिर्द लिपटा हुआ था.

जॉन हैनरी आगे चलता गया. उसने सुन रखा था कि किसी भी आदमी को, जो अच्छे से हथौड़ा चला सकता था, वेस्ट विर्जिनिया में चेस्सापीक और ओहाइयो रेल-मार्ग बनाने का काम मिल सकता था. वास्तव में वह वहीं जा रहा था जब सड़क बनाने के लिए वह बीच में रुक गया था.

अगले दिन जॉन हैनरी रेलवे के कार्यलय पहुँच गया. लेकिन रेल बनाने का काम रुका हुआ था. रेल की पटरी एक पहाड़ के बीच से जानी थी, एक ऐसे पहाड़ के बीच से जिसके सामने जॉन हैनरी भी बहुत छोटा लग रहा था.

लेकिन एक मज़दूर ने जॉन हैनरी को एक नई मशीन के बारे में बताया जिसका उपयोग कर के वह पहाड़ में एक सुरंग बनाने वाले थे. यह 'भाप से चलने वाली ड्रिल' थी. "यह मशीन दस आदमियों से अधिक तेज़ और ताकत से हथौड़ा चला सकती है और इसे आराम करने के लिए कभी रुकना नहीं पड़ता."

अगले दिन मज़दूरों का बॉस 'भाप से चलने वाली ड्रिल' लेकर आ पहुँचा. जॉन हैनरी ने उससे कहा, "हम मुकाबला करते हैं. आपकी 'भाप से चलने वाली ड्रिल' और मेरे बीच मुकाबला."

वह आदमी हँसा. "जॉन हैनरी, मैंने सुना है कि तुम सर्वश्रेष्ठ हो, अब तक के सबसे मज़बूत आदमी. लेकिन 'भाप से चलने वाली ड्रिल' को तुम भी नहीं हरा सकते."

"चलिये पता करते हैं," जॉन हैनरी ने कहा.

बॉस ने कंधे उचकाये. "यह मत समझना कि मैं इंकार कर दूँगा. तुम पहाड़ के दूसरी तरफ से सुरंग बनाना शुरु करो, मैं 'भाप से चलने वाली ड्रिल' की सहायता से इस तरफ से सुरंग बनाना शुरु करुँगा. जो मध्य में पहले पहुँचेगा वही विजेता होगा."
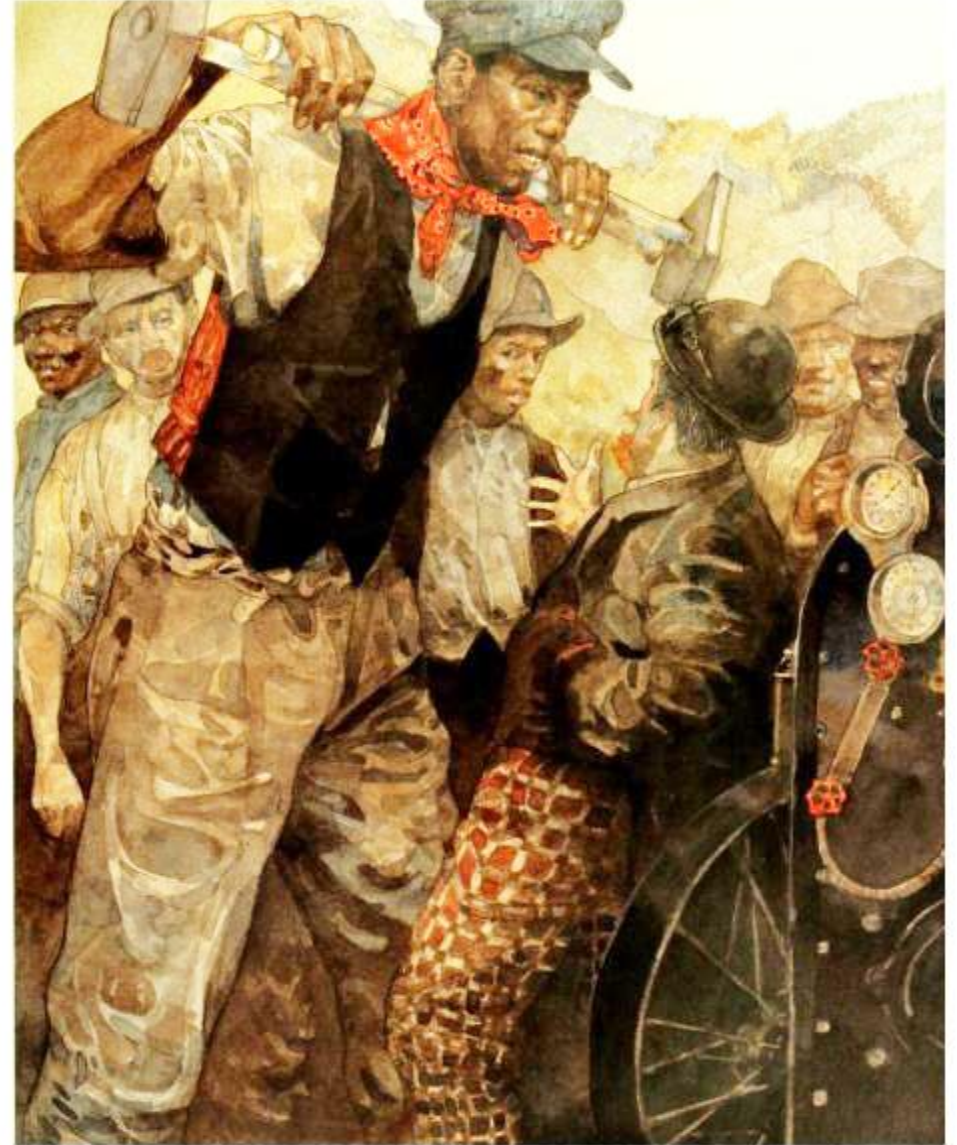
अगली सुबह सब शांत था. पक्षी चहचहा नहीं रहे थे और मुर्ग़े बाँग न दे रहे थे. जब सूर्य ने मुर्ग़े की बाँग न सुनी तो उसे संदेह हुआ कि कुछ गड़बड़ थी. इसलिए वह कुछ मिनट पहले ही उठ गया.

उसने एक पहाड़ देखा जो आहत भावनाओं जितना बड़ा था. पहाड़ के एक तरफ एक मशीन थी जिसके साथ पाइप जूड़ी थी. मशीन धुआं और भाप उगल रही थी. जैसे ही मशीन ने पहाड़ पर वार करना शुरु किया पत्थर और मिट्टी और झाड़ियाँ हवा में उड़ कर दूर गिरने लगीं. पहाड़ के दूसरी ओर जॉन हैनरी खड़ा था. पहाड़ के सामने वह उस अभिलाषा से बड़ा न लग रहा था जो पूरी न होने वाली थी.

उसके हर हाथ में बीस-पाउंड का हथौड़ा था और उसके बाँहों की माँस-पेशियाँ ज्ञान के समान दृढ़ थीं. जैसे ही उसने हथौड़ों को घुमाया वह चाँदी समान चमकने लगे और जब वह चट्टान से टकराये तो सोने समान बजने लगे. शीघ्र ही हर प्रहार के साथ आग की लपटें हवा में फैलने लगीं.

पहाड़ के दूसरी तरफ 'भाप से चलने वाली ड्रिल' के बॉस को लगा कि पहाड़ काँप रहा था. वह भयभीत हो गया और चिल्लाया, "मुझे लगता है कि यह पहाड़ ढह रहा है."

पहाड़ के भीतर अंधकार से एक आवाज़ गूंजी, "यह मेरे हथौड़े हैं जो हवा सोख रहे हैं." सुरंग के अंदर इंद्रधनुष के लिए अधिक जगह न थी इसलिए जिस ओर जॉन हैनरी था उस ओर वह पहाड़ से लिपट गया था.

सारी रात जॉन हैनरी और 'भाप से चलने वाली ड्रिल' काम पर लगे रहे. जॉन हैनरी के हथौड़ों के प्रहार से सुरंग के अंदर से आग की जो लपटें बाहर आ रही थीं उनकी रोशनी में लोगों ने इंद्रधनुष को पहाड़ पर शाल की भांति लिपटे देखा.

यह देखने के लिए कि कौन जीत रहा था, सूर्य अगले दिन थोड़ा पहले ही उदय हो गया. जैसे ही सूर्य उदय हुआ, चट्टान तोड़ कर जॉन हैनरी 'भाप से चलने वाली ड्रिल' के पास पहुँच गया. 'भाप से चलने वाली ड्रिल' का बॉस भौंचक्का रह गया. जॉन हैनरी ने सवा मील लंबी सुरंग खोद दी थी जबकि 'भाप से चलने वाली ड्रिल' सिर्फ चौथाई मील ही खोद पाई थी.
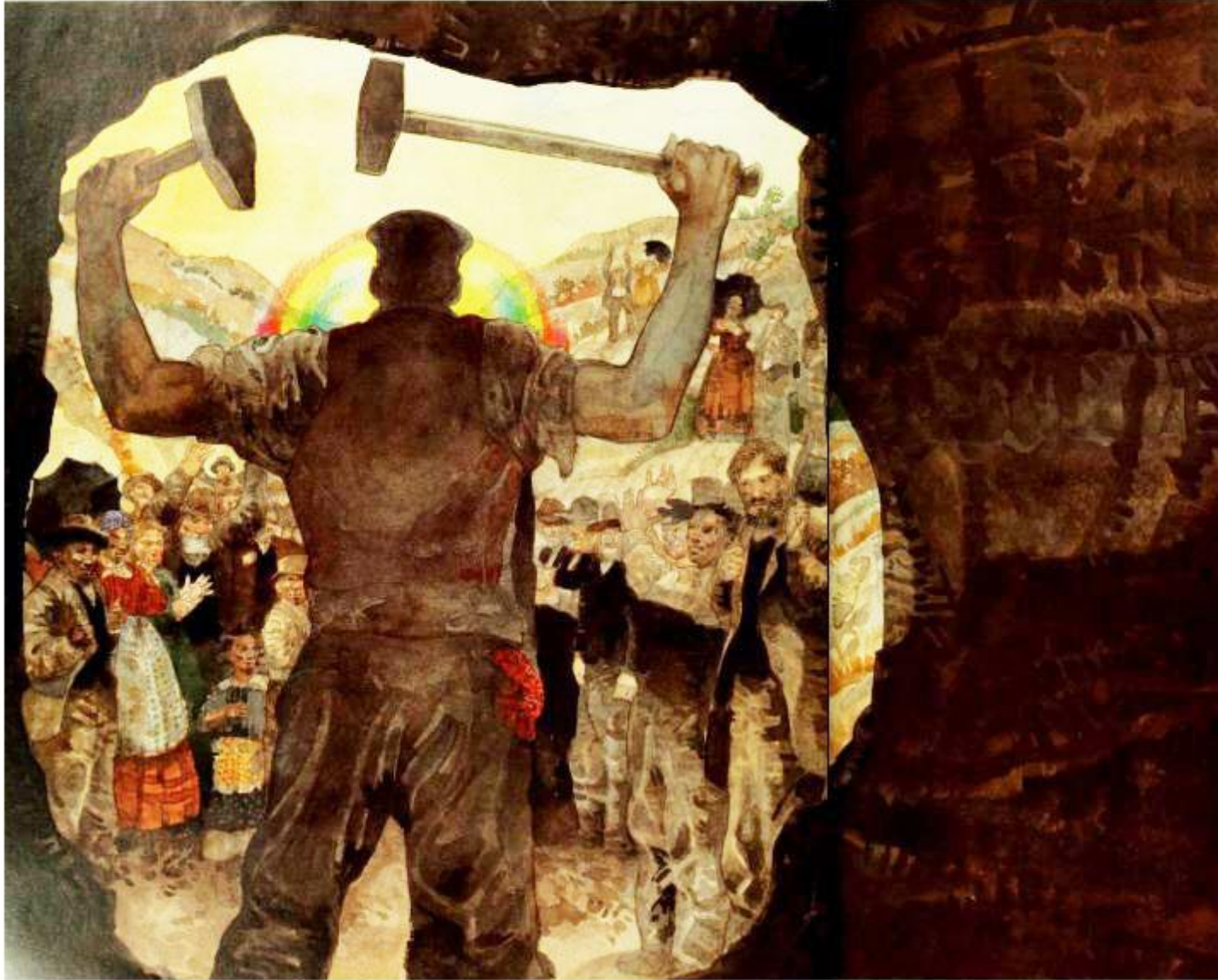
लोग चिल्ला रहे थे, वाहवाही कर रहे थे, “जॉन हैनरी! जॉन हैनरी!”

जॉन हैनरी सुरंग से बाहर दिन के प्रकाश में आया, उसने हाथ ऊपर उठाये, हाथों में उसने हथौड़े पकड़ रखे थे. इंद्रधनुष पहाड़ से फिसल कर उसके कंधे पर फिर से लिपट गया.

मुस्कराते हुए जॉन हैनरी ने अपनी आँखें बंद कर लीं और ज़मीन पर गिर गया. जॉन हैनरी मर गया था. उसने इतनी तेज़ और इतनी ज़ोर से और इतनी देर तक हथौड़े चलाये थे कि उसका विशाल हृदय फट गया था.

सब एक मिनट के लिए चुप हो गये. फिर धीमे से रोने की आवाज़ आई. किसी ने कहा यह आवाज़ चाँद से आई थी. किसी ने कहा उसने सूर्य को आँसू बहाते देखा था.

फिर एक अद्भुत घटना घटी. बाद में लोगों ने शपथ ले कर कहा कि इंद्रधनुष ने फुसफुसाकर कहा था. मुझे नहीं पता कि यह फुसफुसाहट थी या एक विचार जो सबके मन में कौंधा था; हर एक को एक बात का एक साथ अहसास हुआ था, "मरना महत्वपूर्ण नहीं है. हर कोई मरता है. महत्वपूर्ण यह है कि तुम ने कितने अच्छे से जीवन जीया."

एक व्यक्ति तालियाँ बजाने लगा. फिर दूसरा और फिर तीसरा. शीघ्र ही सब तालियाँ बजा रहे थे.

जॉन हैनरी को अलविदा करने के लिए, सूर्य ने अगली सुबह सब को जल्दी उठा दिया. लोगों ने उसके शव को रेल के एक समतल डिब्बे में रख दिया. रेल धीरे-धीरे चलने लगी और पहाड़ से बाहर आ गई. सारे रास्ते लोग रेल की पटरी के दोनों ओर खड़े थे. उनकी आँखों में आँसू थे और वह जय-जयकार करते हुए चिल्ला रहे थे:

"जॉन हैनरी! जॉन हैनरी!"

जॉन हैनरी के शव को वाशिंगटन डी सी ले जाया गया.

कुछ लोगों का कहना है कि जब प्रैज़िडैंट और उनकी पत्नी सो रहे थे, उस के शव को वाइट हाउस के मैदान में दफना दिया गया.

मुझे इस बात की कोई जानकारी नहीं है. जो बात मैं जानता हूँ वह यह है: लोग कहते हैं कि अगर देर रात में तुम वाइट हाउस के पास से निकलो और रुक कर चुपचाप खड़े हो जाओ और ध्यान से सुनो तो शायद तुमको एक गंभीर आवाज़ में यह गीत सुनाई दे:

"मेरे पास है एक इंद्रधनुष
टन्न्न्न्! टन्न्न्न्!
जो लिपटा है मेरे कंधों से
टन्न्न्न्! टन्न्न्न्!
नहीं होगी कोई वर्षा
सच में, नहीं होगी कोई वर्षा
टन्न्न्न्! टन्न्न्न्!"

समाप्त